IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

भारतीय एवं वैश्विक परिपेक्ष में हिंदी-भाषा की उपदेयता का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ मुकेश कुमार
असि. प्रो. हिंदी
विजय सिंह पथिक राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय कैराना, शामली (उ. प्र.)

बीज शब्द ; सशक्तिकरण ,संपादकीय ,व्यक्तित्व ,वैश्विक ,तकनीकी ,मजबूरी ,उपयोगीता,उपनिवेश ,अस्मिता ,विश्व बाजार ,सूचना तंत्र |

"हिन्दी आज केवल भारत की भाषा नहीं ,बल्कि विश्व समुदाय की संपर्क भाषा के रूप में उभर रही है"

(कन्हैया लाल नंदन ,संपादकीय ,गगनांनचल ,जुलाई –सितंबर ,1999)

किसी भी भाषा के वैश्विक स्वरूप का निर्माण मूलतः इसे प्रयोग में लाने वाली जनता की बौद्धिक परिपक्वता, आर्थिक विकास एवं सशक्तिकरण पर निर्भर करता है। कहने का आशय यह है कि जो राष्ट्र आर्थिक एवं तकनीकी रूप से विकसित होगा, उस राष्ट्र की भाषा का विकास एवं प्रसार वैश्विक होगा। भाषा का विकास एवं अवसान वास्तव में उपयोगिता की अवधारणा से जुड़ा है। शम्भूनाथ जी का मानना है कि " आज अक्सर किसी भाषा की ताकत की पहिचान इससे की जाती है की वह बाजार में कितनी दौड़ सकती है । इसमें संदेह नहीं है की आज बाजार में हिन्दी का एक दमकता रूप है । " (भारतीय अस्मिता और हिन्दी ,पृष्ठ .. 69 , सामयिक प्रकाशन , दिल्ली ,प्रथम संस्करण ,2012) भाषा एक माध्यम की तरह काम करती है। जिस भाषा में लोगों को सहूलियत एवं सहजता होगी, उस भाषा को अपनाना उनके लिए ज़रूरत एवं मजबूरी दोनों बन जाती है। आज यह सत्य है कि हिन्दुस्तान में केवल हिन्दी या अंग्रेजी के द्वारा हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास लगभग अधूरा ही है।